सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक: 37 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, गुरुवार 12 मार्च, 2026
मूल्य ₹ 3/-

जो व्यवसाय कुछ और नहीं बस पैसे बनाना जानता है एक तुच्छ व्यवसाय है।
-हेनरी फोर्ड

आईपीएल 2026 का कार्यक्रम... 7 | राज्यसभा चुनाव 2026: 10 राज्यों... 3 | विस-27 चुनाव के लिए सपा ने... 2

सवालों से घबराई सरकार ने फिर बंद कर दिया 4PM चैनल

बड़ा सवाल लोकतंत्र में आवाज कितनी आजाद

» इससे पहले भी कई बार सरकार चैनल को बंद करने का प्रयास कर चुकी है

» सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद दोबारा चालू हुआ था चैनल

» हर बार सच और सवालों की ताकत के आगे सत्ता की दीवारें टिक नहीं सकीं

» 4PM लगातार सरकार की नीतियों फैसलों और राजनीतिक घटनाओं पर तीखे सवाल उठा रहा था

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। जनता की आवाज और देश के नम्बर वन यूट्यूब चैनल 4पीएम पर एक बार फिर सरकारी हथौड़ा चला है। चैनल को सरकार की तरफ से बंद करने का फरमान सुना दिया गया है। ऐसा पहली बार नहीं हुआ है इससे पहले भी सरकार ऐसा कर चुकी है।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद सरकार को बंदिश हटानी पड़ी थी लेकिन कुछ ही महीनों के भीतर एक बार फिर सरकार ने तानाशाही रवैया अपनाते हुए इसे बंद कर दिया है। 4पीएम न्यूज नेटवर्क के संपादक संजय शर्मा का कहना है कि वह न तो झुकेगें और न ही दबेंगे। अगला संघर्ष अब न्याय की चौखट पर होगा जहां से हमे इससे पहले भी इंसाफ मिला है।

जहां चाहा बुलडोजर चला दिया, जिसे चाहा बंद करा दिया

चैनल को बंद किए जाने की खबर के बाद राजनीतिक और पत्रकारिता जगत में भी प्रतिक्रियाएं सामने आने लगी है। आम आदमी पार्टी नेता और सांसद संजय सिंह ने इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला बताया है। उनका कहना है कि सरकार आलोचना से घबराने लगी है और यही वजह है कि मीडिया के स्वतंत्र मंचों पर दबाव बनाया जा रहा है। सोशल एनालिस्ट डीके त्रिपाठी कहते हैं कि अगर किसी कंटेंट पर आपत्ति है तो पारदर्शी जांच और स्पष्ट प्रक्रिया होनी चाहिए ताकि यह स्पष्ट हो सके कि कार्रवाई किस आधार पर की गई। सरकार ने फैशन बना लिया है कि जब चहां घर पर बुल्डोजर चला दिया और जब चहा चैनल बंद करा दिया। यह गलत है और इसका विरोध सड़कों पर होगा।

आखिर क्यों डर रही है सरकार

सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर सरकार को एक यूट्यूब चैनल से इतना खतरा क्यों महसूस हो रहा है। सरकार का तर्क है कि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिहाज से कुछ कंटेंट आपत्तिजनक था। लेकिन आलोचकों का कहना है कि नेशनल सिक्योरिटी अक्सर वह ढाल बन जाती है जिसके पीछे असहज सवालों से बचने की कोशिश की जाती है। राजनीतिक विश्लेषकों के मुताबिक पिछले कुछ वर्षों में डिजिटल मीडिया ने पारंपरिक मीडिया के समीकरण बदल दिए हैं। पहले खबरों का प्रवाह कुछ बड़े संस्थानों तक सीमित था लेकिन अब यूट्यूब और सोशल मीडिया के जरिए छोटे प्लेटफॉर्म भी लाखों लोगों तक अपनी बात पहुंचा सकते हैं। यही वजह है कि सत्ता के लिए ऐसे मंच ज्यादा असुविधाजनक हो जाते हैं क्योंकि उन पर नियंत्रण पारंपरिक मीडिया जितना आसान नहीं होता। 4पीएम जैसे प्लेटफार्म लगातार सरकार की नीतियों फैसलों और राजनीतिक घटनाओं पर तीखे सवाल उठाते रहे हैं और यही कारण है कि इसे बार बार निशाने पर लिया जाता है। अगर लोकतंत्र में आलोचना को ही खतरा मान लिया जाए तो फिर लोकतंत्र का अर्थ ही बदल जाता है। सवाल पूछना अगर अपराध बन जाए तो जवाबदेही की पूरी व्यवस्था कमजोर पड़ जाती है। इसीलिए कई मीडिया संगठनों और स्वतंत्र पत्रकारों ने भी इस कदम पर चिंता जताई है।

4PM National

नेशनल सिक्योरिटी का बहाना या सवालों का डर?

लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत उसकी आवाज होती है। जब यही आवाज दबाने की कोशिश होने लगे तो सवाल केवल एक चैनल का नहीं रह जाता, बल्कि पूरे लोकतांत्रिक ढांचे पर उठ खड़ा होता है। देश के सबसे भरोसेमंद यूट्यूब प्लेटफार्म 4पीएम पर एक बार फिर सरकारी हथौड़ा चल गया है। सरकार ने नेशनल सिक्योरिटी थ्रेट का हवाला देकर चैनल को बंद करने का आदेश जारी कर दिया। यह पहली बार नहीं है। इससे पहले भी कई मौकों पर इस चैनल को रोकने या दबाने की कोशिशें हुईं। लेकिन हर बार सच और सवालों की ताकत के आगे सत्ता की दीवारें टिक नहीं सकीं।

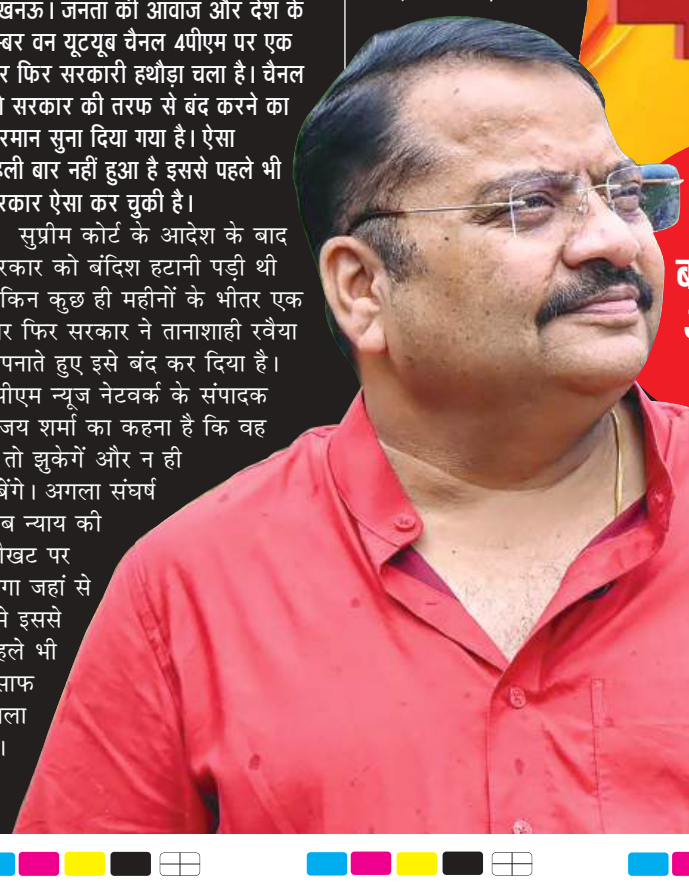

नेशनल सिक्योरिटी थ्रेट बता कर जनता की आवाज को दबाने की कोशिश

एक चैनल से इतना क्यों डरती है सरकार?

कुछ समय पहले भी इसी प्रकार के आदेश के बाद मामला अदालत तक पहुंचा और सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया के आदेश के बाद चैनल को दोबारा चालू करना पड़ा। लेकिन अब कुछ ही महीनों के भीतर एक बार फिर वही कहानी दोहराई जा रही है। एक बार फिर वही आरोप वही बंदिश और वही सवाल कि आखिर सरकार को एक यूट्यूब चैनल से इतना डर क्यों है।

लोकतंत्र में सवालों की जगह

भारत को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र कहा जाता है। इस लोकतंत्र की असली ताकत चुनाव से भी ज्यादा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मानी जाती है। जब मीडिया सवाल पूछता है तो वह केवल सरकार से नहीं बल्कि पूरे सिस्टम से जवाबदेही मांगता है। यही वजह है कि इतिहास में कई बड़े खुलासे और बदलाव पत्रकारिता की वजह से संभव हुए। 4 पीएम का मामला भी उसी बहस का हिस्सा बन गया है क्या डिजिटल दौर में स्वतंत्र मीडिया की जगह सिकुड़ रही है या यह सिर्फ एक कानूनी प्रक्रिया का हिस्सा है। फिलहाल इतना तय है कि यह विवाद जल्द खत्म होने वाला नहीं है। मामला फिर अदालत पहुंचेगा और तब शायद यह फैसला केवल एक चैनल का नहीं बल्कि उस सवाल का भी होगा कि लोकतंत्र में आवाज कितनी आजाद है।

बिना डरे, बिना झुके जारी है कारवां

जब सत्ता और मीडिया का रिश्ता सवालों से ज्यादा समझौतों पर टिकने लगे, तब कुछ आवाजें ऐसी भी होती हैं जो हर कीमत पर सवाल पूछने की हिम्मत रखती हैं। 4पीएम भी उन्हीं आवाजों में से एक माना जाता है। चैनल के संपादक संजय शर्मा ने साफ शब्दों में कहा है कि वह न तो झुकेंगे और न ही दबेंगे। उनका कहना है कि अगर सवाल पूछना अपराध है तो यह अपराध वह आगे भी करते रहेंगे। उनके मुताबिक यह केवल एक चैनल को बंद करने का मामला नहीं है बल्कि यह उस सोच का हिस्सा है जिसमें आलोचना को दुश्मनी और सवाल को साजिश मान लिया जाता है। 4पीएम के दर्शकों का भी यही कहना है कि चैनल ने हमेशा उन मुद्दों को उठाया जिन्हें अक्सर मुख्यधारा के बड़े प्लेटफार्म नजरअंदाज कर देते हैं। बेरोजगारी, महंगाई, किसानों के सवाल, और सत्ता से जुड़े विवाद इन सब पर लगातार सवाल उठाने की वजह से यह प्लेटफार्म तेजी से लोकप्रिय हुआ। यही कारण है कि सोशल मीडिया पर इसके समर्थकों का बड़ा समूह है। जब भी चैनल के खिलाफ कार्रवाई होती है डिजिटल दुनिया में विरोध की आवाजें तेज हो जाती हैं। संपादक संजय शर्मा कहते हैं कि उन्हें पूरा भरोसा है कि न्यायपालिका एक बार फिर लोकतंत्र की आवाज को बहाल करेगी। उनके शब्दों में सच को थोड़ी देर के लिए रोका जा सकता है हमेशा के लिए नहीं।

विस-27 चुनाव के लिए सपा ने कसर कमर

» सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने बनाई रणनीति

» नया समीकरण साधने की कोशिश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में साल 2027 के विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए समाजवादी पार्टी ने अभी से अपनी चुनावी रणनीति पर काम शुरू कर दिया है। पार्टी खास तौर पर उन क्षेत्रों में अपनी पकड़ मजबूत करने की तैयारी कर रही है, जहां पिछले चुनावों में उसे सफलता नहीं मिल पाई थी। इसी कड़ी में सपा प्रमुख अखिलेश यादव 29 मार्च को गौतमबुद्धनगर के दादरी में 'समाजवादी समानता भाईचारा रैली' को संबोधित करेंगे.इसे पार्टी के चुनावी अभियान की शुरुआत के रूप में देखा जा रहा है।

समाजवादी पार्टी ने साल 2012 में पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई थी, लेकिन उसके बाद 2017 और 2022 के विधानसभा चुनाव में पार्टी दोबारा सत्ता में वापसी नहीं कर सकी। साल 2022 के चुनाव में सपा को 403 सीटों में से 111 सीटों पर ही जीत मिली थी. उस समय राष्ट्रीय लोकदल के साथ गठबंधन के बावजूद पश्चिमी यूपी में अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी थी। राजनीतिक जानकारों के मुताबिक दादरी और आसपास के इलाकों में जाट और गुर्जर मतदाताओं का खास प्रभाव है, वहीं दलित और अल्पसंख्यक मतदाताओं की भी अच्छी संख्या है. ऐसे में सपा इस रैली के जरिए इन सभी वर्गों को एक मंच पर लाकर पश्चिमी यूपी में अपनी राजनीतिक जमीन मजबूत करने की कोशिश कर रही है।

पश्चिमी यूपी पर खास फोकस

समाजवादी पार्टी इस बार पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अपने सामाजिक समीकरण को मजबूत करने पर विशेष ध्यान दे रही है पार्टी की रणनीति पीडीए यानी पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक वर्ग के साथ जाट और गुर्जर मतदाताओं को भी जोड़ने की है। दादरी में आयोजित होने वाली रैली को इसी रणनीति का अहम हिस्सा माना जा रहा है. पार्टी नेता इस रैली में बड़ी संख्या में लोगों को जुटाकर शक्ति प्रदर्शन की तैयारी में लगे हैं।

संगठन को दी जिम्मेदारी

दादरी की रैली को सफल बनाने के लिए पार्टी ने गौतमबुद्धनगर, गाजियाबाद, मेरठ, बुलंदशहर, बागपत और हापुड़ जिलों के नेताओं को विशेष जिम्मेदारी सौंपी है. सभी पदाधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करें।

आलू, टमाटर, प्याज के दाम बढ़े, पैनिक है, विपक्ष फैला नहीं रहा : जया बच्चन

समाजवादी पार्टी की नेता और राज्यसभा सांसद जया बच्चन ने एलपीजी संकट के बीच दावा किया है कि आलू प्याज के दाम भी बढ़ गए हैं। सरकार अगर कह रही है कि एलपीजी का संकट नहीं है तो ठीक है लोग चूल्हा जला लेंगे लेकिन आलू प्याज का क्या करेंगे? सरकार द्वारा यह आरोप लगाए जाने पर कि विपक्ष पैनिक फैला रहा है, जया बच्चन ने कहा कि अपोजिशन पैनिक फैला नहीं रहा है बल्कि पैनिक है। जब सोसाइटी किसी मुद्दे पर पैनिक करती है तो हम लो वह आवाज उठाते हैं। बच्चन ने कहा कि टैक्स पेयर्स के लिए तो कुछ है ही नहीं। उनको तो आप मार ही रहे हैं। उनके लिए तो कोई सुविधा नहीं है। मंत्रियों के लिए सायरन, बत्ती का इंतजाम है। उनके लिए रास्ते ब्लॉक हो जाते हैं। आम आदमी को क्या मिल रहा है। गरीब परेशान हो रहा है। जो बेचारे गरीब हैं, जो बेचारे टैक्स नहीं देते, उनके लिए क्या है? न गैस न सुविधाएं हैं।

आबकारी नीति मामले की सुनवाई कहीं और की जाए : अरविंद केजरीवाल

» आप नेता ने दिल्ली हाईकोर्ट की जज पर उठाए सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली आबकारी नीति मामले की सुनवाई कर रहीं न्यायमूर्ति स्वर्ण कांता शर्मा की पीठ पर निष्पक्षता को लेकर सवाल उठाते हुए केस को किसी अन्य बेंच में स्थानांतरित करने की मांग की है। केजरीवाल ने अपनी याचिका में दलील दी है कि अदालत ने पहली सुनवाई में ही बिना आरोपियों को सुने निचली अदालत के फैसले को त्रुटिपूर्ण बताकर और ईडी को निर्देश जारी कर पूर्वाग्रह का संकेत दिया है।

दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के समक्ष एक अभ्यावेदन प्रस्तुत किया गया है जिसमें आबकारी नीति मामले से संबंधित आपराधिक पुनरीक्षण याचिका को न्यायमूर्ति स्वर्ण कांता शर्मा की पीठ से किसी अन्य उपयुक्त पीठ में स्थानांतरित करने की मांग की गई है। यह अभ्यावेदन अरविंद केजरीवाल द्वारा दायर किया गया है, जो इस मामले में प्रतिवादी संख्या 18 के रूप में नामित हैं। 11 मार्च को दिए गए अभ्यावेदन में केजरीवाल ने मुख्य

न्यायाधीश से, मास्टर ऑफ द रोस्टर के रूप में, न्यायिक कार्यवाही की निष्पक्षता और तटस्थता में जनता के विश्वास को बनाए रखने के लिए मामले को प्रशासनिक रूप से स्थानांतरित करने का आग्रह किया है। अभ्यावेदन में केंद्रीय जांच ब्यूरो द्वारा कथित आबकारी नीति मामले में आरोपियों को बरी किए जाने को चुनौती देने वाली पुनरीक्षण याचिका की पहली सुनवाई के दौरान हुए कुछ घटनाक्रमों पर चिंता व्यक्त की गई है। इसमें कहा गया है कि 9 मार्च को पहली सुनवाई में ही न्यायालय ने नोटिस जारी कर प्रथम दृष्टया यह राय दर्ज की कि निचली अदालत का विस्तृत बरी करने का आदेश त्रुटिपूर्ण था, जबकि बरी किए गए आरोपियों की सुनवाई अभी तक नहीं हुई थी। अभ्यावेदन के अनुसार, अदालत ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के तहत कार्यवाही को प्रभावित करने वाले अंतरिम निर्देश भी जारी किए, जबकि एजेंसी पुनरीक्षण याचिका में पक्षकार नहीं थी। इसमें कहा गया है कि सीबीआई द्वारा दायर याचिका में ईडी की कार्यवाही से संबंधित राहत की मांग नहीं की गई थी और प्रारंभिक चरण में इसे एकतरफा रूप से प्रदान किया गया था। याचिका में आगे तर्क दिया गया है कि ऐसे निर्देशों के व्यापक परिणाम होंगे क्योंकि ईडी का मामला सीबीआई द्वारा जांचे गए मूल अपराध पर आधारित है। इसमें तर्क दिया गया है कि ईडी की कार्यवाही को पुनरीक्षण याचिका के परिणाम से जोड़ना, बिना किसी प्रार्थना के और बरी किए गए आरोपियों की सुनवाई किए बिना, इस मामले में अपनाए जाने वाले दृष्टिकोण के बारे में आशंकाओं को मजबूत करता है।

एनडीए सरकार ने सरकारी खजाना खाली किया : रेड्डी

» चंद्रबाबू के सत्ता में आने के बाद से राज्य का कर्ज बढ़ा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

हैदराबाद। वाईएसआरसीपी प्रमुख जगन मोहन रेड्डी नेकहा कि चंद्रबाबू नायडू सरकार द्वारा पेश किया गया बजट भ्रामक आंकड़ों और झूठे दावों से भरा है। जगन ने कहा कि चंद्रबाबू के सत्ता में आने के बाद से राज्य का कर्ज लगातार बढ़ रहा है। हमारे पांच साल के शासनकाल में कुल कर्ज लगभग 33 लाख करोड़ रुपये था। लेकिन चंद्रबाबू के शासन के सिर्फ दो वर्षों में ही कर्ज 32 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गया है।

जगन ने कहा कि जब भी चंद्रबाबू सत्ता में आते हैं, राजस्व घट जाता है और कर्ज बढ़ जाता है। इसका कारण स्पष्ट है – व्यापक भ्रष्टाचार और संसाधनों का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग। सरकारी जमीनें निजी रियल एस्टेट कंपनियों को कौड़ियों के भाव में सौंपी जा रही हैं। विशाखापत्तनम में हजारों करोड़ रुपये की जमीनें रिश्तेदारों और सहयोगियों को आवंटित की जा रही हैं। जगन रेड्डी ने टीडीपी पर जमकर निशाना साधते हुए कहा कि सरकार खजाने में न्यूनतम शेष राशि भी नहीं रख पा रही है। उन्होंने आगे कहा कि विधानसभा सत्र जनता की समस्याओं पर चर्चा करने के बजाय नाटक, नुक्कड़ नाटक और आत्म-प्रशंसा में सिमट गए। हमने सुपर सिक्स योजनाओं के वादों के बारे में सवाल पूछे, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। महिलाओं से किए गए वादों का क्या हुआ? गरीबों के लिए आवास का क्या हुआ ?पिछले दो वर्षों में क्या उन्होंने गरीबों को एक भी जमीन दी है या एक भी घर बनाया है ?उन्होंने कहा कि आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सड़कों पर विरोध प्रदर्शन कर रही हैं, लेकिन सरकार उनकी समस्याओं को नजरअंदाज कर रही है। हालांकि, जब चंद्रबाबू राजनीतिक सभाएं आयोजित करते हैं, तो वे आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की उपस्थिति की उम्मीद करते हैं।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

नेता प्रतिपक्ष संविधान के सबसे बड़े दुश्मन : केटीआर

» बीआरएस और कांग्रेस के बीच राजनीतिक टकराव बढ़ा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। तेलंगाना में दलबदल को लेकर बीआरएस और कांग्रेस के बीच राजनीतिक टकराव बढ़ गया है, क्योंकि स्पीकर ने दो विधायकों के खिलाफ अयोग्यता याचिकाएं खारिज कर दी हैं केटीआर ने कांग्रेस पर आया राम गया राम की संस्कृति को बढ़ावा देने का आरोप लगाया।

भारतीय राष्ट्र समिति (बीआरएस) के कार्यकारी अध्यक्ष केटीआर ने आरोप लगाया कि तेलंगाना विधानसभा अध्यक्ष गद्दाम प्रसाद कुमार ने कथित तौर पर दलबदल करने वाले विधायकों के खिलाफ लंबित अयोग्यता याचिकाओं को अत्यधिक दबाव में आकर खारिज करने का फैसला किया और राहुल गांधी को एक मज़ाकिया

नेता बताया। केटीआर ने लोकसभा में विपक्ष के नेता पर आरोप लगाया कि वे एक तरफ खुद को संविधान का रक्षक बताते हैं, वहीं दूसरी तरफ दलबदल की बात करते हैं और कांग्रेस पर संविधान पर हमला करने का आरोप लगाते हैं। उन्होंने कहा कि तेलंगाना अध्यक्ष पर यह फैसला लेने के लिए अत्यधिक दबाव था। राहुल गांधी एक मज़ाकिया नेता हैं। एक तरफ वे भारत के संविधान का अपमान करते हैं और खुद को भारत के संविधान का रक्षक बताते रहते हैं, वहीं दूसरी तरफ वे दलबदल की बात करते हैं और स्वत: अयोग्यता की बात करते हैं। वे इतने बड़े मसखरे हैं कि उनके अध्यक्ष ने कांग्रेस टिकट पर सांसद चुनाव लड़ने वाले विधायक के खिलाफ याचिका खारिज कर दी। एक अंधा भी सही देख सकता है। तेलंगाना की जनता को जवाब दें। इंदिरा गांधी ने इन दलबदल की शुरुआत की है। आया राम गया राम की शुरुआत कांग्रेस ने की थी। कांग्रेस आज जो कर रही है, वह संविधान पर हमला है। राहुल गांधी इसमें मुख्य दोषी हैं।

यह घटना तेलंगाना विधानसभा अध्यक्ष गद्दाम प्रसाद कुमार द्वारा कथित तौर पर दलबदल करने वाले विधायकों कडियाम श्रीहरि और दानम नागेंद्र के खिलाफ लंबित दो अयोग्यता याचिकाओं को खारिज करने के बाद सामने आई है। दानम नागेंद्र ने खैरताबाद विधानसभा क्षेत्र से बीआरएस के टिकट पर जीत हासिल की थी और बाद में सिकंदराबाद से कांग्रेस के टिकट पर सांसद के रूप में चुनाव लड़ा था।

राज्यसभा चुनाव 2026 : 10 राज्यों की 37 सीटों पर मचा घमासान

महाराष्ट्र से राज्यसभा में शरद पवार और आठवले की निर्विरोध एंट्री

» बिहार, हरियाणा और ओडिशा जैसे राज्यों में दिलचस्प मुकाबला देखने को मिलेगा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। राज्यसभा चुनावों को लेकर सियासी चर्चा तेज हो गई है। ऐसे माना जा रहा 37 सीटों में से 26 का रास्ता साफ हो गया है। जबकि 11 पर आर-पार की लड़ाई देखने को मिलेगी। महाराष्ट्र से राज्यसभा में शरद पवार और आठवले की निर्विरोध एंट्री की संभावना रही है। वहीं बिहार की राजनीति में इस बार राज्यसभा चुनाव काफी चर्चा में है। राज्य विधानसभा सचिव ख्याति सिंह के अनुसार, छह उम्मीदवारों में से किसी ने भी नाम वापस नहीं लिया, जिससे एक दशक बाद यहां मतदान की आवश्यकता पड़ी है।

देश के उच्च सदन (राज्यसभा) के लिए चल रही चुनावी प्रक्रिया में सोमवार को एक बड़ा पड़ाव आया। नामांकन वापसी की समय सीमा समाप्त होने के बाद, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (सपा) के प्रमुख शरद पवार और केंद्रीय मंत्री रामदास आठवले समेत कुल 26 उम्मीदवारों को निर्विरोध चुन लिया गया है। अब शेष 11 सीटों के लिए 16 मार्च को मतदान होगा, जिसमें बिहार, हरियाणा और ओडिशा जैसे राज्यों में दिलचस्प मुकाबला देखने को मिल सकता है। 16 मार्च 2026 को होने वाले राज्यसभा चुनावों के लिए 10 राज्यों की 37 सीटों पर मतदान का शेड्यूल जारी किया गया है। बिहार में पांच सीटों में से चार पर एनडीए की मजबूत पकड़ है, लेकिन पांचवीं सीट पर आरजेडी ने ए.डी. सिंह को उतारा है। महाराष्ट्र की 7 सीटों में शरद पवार, रामदास आठवले, विनोद तावड़े जैसे दिग्गज निर्विरोध चुने जाने की स्थिति में।

यहां मुकाबला कड़ा है

राज्यसभा चुनाव को लेकर सबसे दिलचस्प लड़ाई बिहार में मानी जा रही है। आरजेडी द्वारा ए.डी. सिंह को मैदान में उतारने से पांचवीं सीट पर समीकरण बिगड़ते दिख रहे हैं। एनडीएको अतिरिक्त समर्थन की तलाश करनी पड़ सकती है। बिहार से जिन पांच राज्यसभा सदस्यों का कार्यकाल अप्रैल में समाप्त हो रहा है, उनमें राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह, केंद्रीय मंत्री रामनाथ ठाकुर, प्रेमचंद्र गुप्ता, अमरेंद्र धारी सिंह और उपेंद्र कुशवाहा शामिल हैं। इनमें हरिवंश नारायण सिंह और रामनाथ ठाकुर जनता दल (यूनाइटेड) के, प्रेमचंद्र गुप्ता और अमरेंद्र धारी सिंह राजद के तथा उपेंद्र कुशवाहा राष्ट्रीय लोक मोर्चा (रालोमो) के प्रतिनिधि हैं।

सत्ता समीकरणों को प्रभावित करने वाले साबित होंगे रास चुनाव

राज्यसभा चुनाव 2026 सत्ता समीकरणों को प्रभावित करने वाले साबित होंगे। कई राज्यों में बीजेपी और एनडीए की स्थिति मजबूत दिख रही है, वहीं विपक्ष भी जहां मौका मिल रहा है, कड़ी टक्कर दे रहा है। अधिकतर सीटों पर निर्विरोध परिणाम से माहौल शांत दिख रहा है, लेकिन बिहार, ओडिशा और हरियाणा चुनावी रोमांच बनाए हुए हैं।

बिहार में नीतीश कुमार और नितिन नवीन के चुने जाने की संभावना

बिहार में पांच, ओडिशा में चार और हरियाणा में दो सीटों के लिए चुनाव कराए जाएंगे। बिहार के सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहने वाले नीतीश कुमार और भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन के राज्यसभा के लिए चुने जाने की संभावना है। दस राज्यों में 37 सीटों के लिए 40 उम्मीदवारों ने अपना पर्चा दाखिल किया था। 26 उम्मीदवारों के निर्विरोध चुने जाने के बाद अब 11 सीटों के लिए 14 उम्मीदवार मैदान में हैं। भाजपा अध्यक्ष नवीन ने सोमवार को बिहार, हरियाणा और ओडिशा में राज्यसभा चुनाव के लिए केंद्रीय पर्यवेक्षकों की नियुक्ति की। केंद्रीय मंत्री हर्ष मल्होत्र छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा को बिहार चुनाव के लिए केंद्रीय पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया है। एक अधिसूचना में कहा गया है कि गुजरात के उपमुख्यमंत्री हर्ष संघवी को हरियाणा के लिए पर्यवेक्षक बनाया गया है, जबकि महाराष्ट्र के मंत्री चंद्रशेखर बावनकुले ओडिशा के लिए केंद्रीय पर्यवेक्षक होंगे।

हरियाणा में 'क्रॉस वोटिंग

हरियाणा में राज्यसभा की दो सीटों पर चुनाव है। बीजेपी ने केवल एक उम्मीदवार उतारा है, जबकि दूसरी सीट पर कांग्रेस और क्षेत्रीय दलों के बीच टकराव की संभावना है। हरियाणा में भी एक सीट के लिए दिलचस्प मुकाबले का इंतजार है, जहां पहले भी ''क्रॉस वोटिंग'' देखी गई है। कांग्रेस के पास 37 विधायक हैं और एक सीट जीतने के लिए विपक्षी दल को प्रथम वरीयता वाले केवल 31 वोट की जरूरत है।

हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस का बहुमत साफ

हिमाचल प्रदेश में सिर्फ एक सीट है, जिस पर कांग्रेस का बहुमत साफ है। पार्टी ने अभिषेक मनु सिंघवी को उम्मीदवार बनाया है। यही वजह है कि हिमाचल में राज्यसभा चुनाव को लेकर कोई हलचल नजर नहीं आ रही है।

तमिलनाडु में 6 उम्मीदवार निर्विरोध

डीएमके, एआईडीएमके और अन्य दलों के समीकरणों के चलते तमिलनाडु में 6 उम्मीदवार निर्विरोध चुने जा सकते हैं। इनमें तिरुचि शिवा) और एम. थंबीदुरई शामिल हैं।

पश्चिम बंगाल की 5 सीटों पर कौन-कौन?

पश्चिम बंगाल में 5 सीटें हैं। टीएमसी के बाबुल सुप्रियो और कोयल मल्लिक जैसे नामों के निर्विरोध चुने जाने की चर्चाएं हैं। लेकिन ममता बनर्जी ने आखिर तक पने पूरे पत्ते नहीं खोले थे।

छत्तीसगढ़ में कांग्रेस और बीजेपी को एक-एक सीट

छत्तीसगढ़ में कांग्रेस और बीजेपी एक-एक सीट पर अपने उम्मीदवार उतार चुकी हैं। कांग्रेस ने फूलो देवी नेताम को, जबकि बीजेपी ने लक्ष्मी वर्मा को नामित किया है। इन दोनों के निर्विरोध चुने जाने के आसार हैं।

असम में 3 सीटों पर एनडीए का रास्ता साफ

असम की 3 सीटों पर एनडीए को स्पष्ट बढ़त है। जोगेन मोहन, तेराश गोवाला और प्रमोद बोरो के निर्विरोध चुने जाने की राह साफ मानी जा रही है।

ओडिशा में त्रिकोणीय मुकाबला

ओडिशा में राज्यसभा की 4 सीटों पर मुकाबला त्रिकोणीय हो गया है। कांग्रेस ने BJD का समर्थन किया है। वहीं,बीजेपी ने निर्दलीय दिलीप राय को समर्थन देकर प्रतिद्वंद्विता बढ़ा दी है।

महाराष्ट्र से इन तीन दिग्गजों का राज्यसभा पहुंचना तय

महाराष्ट्र में कुल 7 सीटों पर चुनाव होना है। लेकिन यहां से भी कई बड़े नाम निर्विरोध संसद के उच्च सदन में पहुंचते दिख रहे हैं महाराष्ट्र में शरद पवार, रामदास आठवले और BJP के विनोद तावड़े जैसे दिग्गजों की वापसी तय मानी जा रही है।

बिहार में एक सीट के लिए कड़ा मुकाबला

बिहार में एक सीट के लिए कड़ा मुकाबला देखने को मिलेगा क्योंकि व्यवसायी से नेता बने राजद सांसद अमरेंद्र धारी सिंह को फिर से उम्मीदवार बनाया गया है। बिहार से अन्य राजग उम्मीदवारों में केंद्रीय मंत्री रामनाथ ठाकुर और उपेन्द्र कुशवाह और शिवेश कुमार शामिल हैं। राजद गठबंधन के पास 25 विधायक हैं और उसे एआईएमआईएम और बसपा से छह वोट की उम्मीद है। बिहार विधानसभा सचिव ख्याति सिंह के अनुसार, छह उम्मीदवारों में से किसी ने भी अपना नामांकन पत्र वापस नहीं लिया और एक दशक से अधिक समय बाद राज्य में पहली बार मतदान की आवश्यकता हुई। ओडिशा में भी एक सीट के लिए मुकाबला होगा। सत्तारूढ़ भाजपा के दो उम्मीदवार - राज्य इकाई के अध्यक्ष मनमोहन सामल और मौजूदा राज्यसभा सदस्य सुजीत कुमार तथा विपक्षी बीजद के संतरूप मिश्रा और डॉ. दत्तेश्वर होता मैदान में हैं, जबकि दिलीप रे ने भाजपा के समर्थन से निर्दलीय के रूप में नामांकन दाखिल किया है, जिससे ''क्रॉस-वोटिंग'' की संभावना बढ़ गई है।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

असमानताओं पर प्रहार एवं समानता का विस्तार आवश्यक

इस समय मजबूत सामाजिक सुरक्षा तंत्र अनिवार्यता बन चुका है। कोविड-19 महामारी ने यह स्पष्ट कर दिया कि संकट किसी भी समाज को अचानक अस्थिर कर सकता है। बेरोजगारी, स्वास्थ्य संकट और आर्थिक मंदी से निपटने के लिए सामाजिक सुरक्षा जाल का सुदृढ़ होना अत्यंत आवश्यक है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिवर्ष 20 फरवरी को मनाया जाने वाला विश्व सामाजिक न्याय दिवस आज के समय में केवल असमानताओं पर प्रहार एवं समानता के विस्तार की एक सार्थक पुकार का अंतरराष्ट्रीय आयोजन ही नहीं, बल्कि वैश्विक चेतना का आह्वान है। वर्ष 2026 में यह दिवस विशेष महत्व ग्रहण कर रहा है, क्योंकि विश्व तेजी से बदलती अर्थव्यवस्था, तकनीकी संक्रमण, जलवायु संकट, राजनीतिक ध्रुवीकरण और सामाजिक असमानताओं के बीच नई संतुलित व्यवस्था की तलाश में है। वृद्धजन, दिव्यांग, महिलाएं, बच्चे और असंगठित क्षेत्र के श्रमिक-इन सभी के लिए संरक्षित ढांचा ही न्यायपूर्ण समाज की नींव है।

भारत जैसे विविधतापूर्ण लोकतंत्र में सामाजिक न्याय का विचार ऐतिहासिक और संवैधानिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। भारतीय संविधान ने समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के सिद्धांतों के माध्यम से एक ऐसे समाज की कल्पना की है जहां जाति, धर्म, लिंग या वर्ग के आधार पर भेदभाव न हो। आज भी सामाजिक न्याय का प्रश्न केवल आर्थिक असमानता तक सीमित नहीं है; यह सामाजिक पूर्वाग्रहों, लैंगिक भेदभाव, क्षेत्रीय असंतुलन और सांस्कृतिक असमानताओं से भी जुड़ा है। सामाजिक न्याय के लिए अंतर को पाटना हमें यह याद दिलाता है कि विकास तभी सार्थक है जब वह समावेशी हो और समावेशन तभी प्रभावी है जब वह न्यायपूर्ण हो। सामाजिक न्याय का अर्थ केवल अवसरों की समानता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उस व्यापक व्यवस्था की स्थापना का आग्रह करता है जिसमें संसाधनों, अधिकारों और गरिमा का निष्पक्ष वितरण सुनिश्चित हो। जब तक समाज के अंतिम व्यक्ति को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सुरक्षा की समान उपलब्धता नहीं मिलती, तब तक प्रगति अधूरी है। 2026 की थीम विशेष रूप से उन समुदायों की भागीदारी पर बल देती है जो ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रहे हैं-चाहे वे आर्थिक रूप से वंचित हों, सामाजिक रूप से उपेक्षित हों या राजनीतिक रूप से प्रतिनिधित्व से दूर हों। समावेशन का सशक्तिकरण केवल नीतिगत घोषणा नहीं, बल्कि निर्णय-प्रक्रिया में सक्रिय सहभागिता का अधिकार है। आज वैश्विक स्तर पर असमानताओं की खाई कई रूपों में दिखाई देती है। एक ओर तकनीकी क्रांति और कृत्रिम बुद्धिमत्ता रोजगार के नए अवसर सृजित कर रही है, तो दूसरी ओर पारंपरिक श्रम-आधारित रोजगार असुरक्षित होते जा रहे हैं। डिजिटल विभाजन नई सामाजिक दूरी का कारण बन रहा है। ग्रामीण और शहरी, विकसित और विकासशील, पुरुष और महिला, सक्षम और दिव्यांग-इन सबके बीच संसाधनों की असमान पहुंच सामाजिक तनाव को जन्म देती है।

“ संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिवर्ष 20 फरवरी को मनाया जाने वाला विश्व सामाजिक न्याय दिवस आज के समय में केवल असमानताओं पर प्रहार एवं समानता के विस्तार की एक सार्थक पुकार का अंतरराष्ट्रीय आयोजन ही नहीं, बल्कि वैश्विक चेतना का आह्वान है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

दिल्ली के दिल में छाई अजीब खामोशी पर उठते प्रश्न

ज्योति मल्होत्रा

अमेरिकियों ने बीच समुद्र फंसे रूसी तेल को खरीदने के वास्ते लिए भारत को 30 दिन की छूट दे दी है। यह वो संदेश है जो बीते शुक्रवार सुबह-सुबह ट्रंप प्रशासन की ओर से आया। अभी यह स्पष्ट नहीं कि मोदी सरकार को ट्रंप प्रशासन के इन निर्देशों से चिढ़ हुई अथवा नहीं, क्योंकि उसे बताया जा रहा है कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं, इसमें यह भी शामिल है कि किससे तेल खरीदना है, कितना खरीदना है, और कब शुरू या बंद करना है। याद करें कि पिछले महीने ही, जब ट्रंप ने व्यापार समझौते के हिस्से के तौर पर घोषणा की थी कि भारत-अमेरिकी द्विपक्षीय व्यापार पर लगाया गया 25 फीसदी अतिरिक्त शुल्क हटा रहे हैं, तब उन्होंने साफ कर दिया था कि यदि भारत फिर रूसी तेल खरीदने लगेगा, तो यह शुल्क दुबारा लागू हो जाएगा।

और इसलिए, करीब हफ्ता पहले ईरान संकट शुरू होने के बाद से मोदी सरकार की विदेश नीति को लेकर जो बहसें चल रही हैं, जिसमें सोनिया गांधी और राहुल गांधी दोनों ने दखल दिया, उसमें आत्मनिर्भरता के इस नवीनतम प्रारूप को बतौर राष्ट्र नीति का साधन बरतने पर प्रश्न उठ रहे हैं। विदेश मंत्रालय अपनी जिस 'व्यावहारिक नीति' की बहुत बड़ाई करता रहता है, शायद उसके तहत मानता है कि उसको दुनिया के सबसे ताकतवर आदमी, डोनाल्ड ट्रंप को नाराज नहीं करना चाहिए, और इसलिए ईरान पर बमबारी के मामले में उसके साथ चलना बेहतर है। इस नजरिये से तो भारतीयों को ब्रिटिश राज के खिलाफ स्वतंत्रता आंदोलन कभी नहीं करना चाहिए था, क्योंकि, याद रहे कि उनके राज में, ट्रेनें हमेशा समय पर चलती थीं, सबके लिए शिक्षा शुरू की गई थी और सती जैसी सामाजिक बुराइयों पर रोक लगा दी गई थी। कुछ अन्य लोग कहेंगे कि आत्मनिर्भरता का मतलब वास्तव में कुछ और है। यह जागरूक बने रहने, दुनिया की जटिलताओं को समझने, जरूरत पड़ने पर अलग-अलग पक्ष चुनने का निरंतर संघर्ष है- हकीकत में, सभी पक्षों के साथ तालमेल रखना पड़ता है, क्योंकि तभी तो आप अपने देश के हितों की रक्षा कर सकेंगे। (जवाहरलाल नेहरू ने इसे 'गुटनिरपेक्षता' कहा था, चलिए इस पर बहस किसी और दिन)।

सच तो यह कि भारत को वैश्विक राजनीति की नित बदलती बिसात का फायदा उठाने का तगड़ा अनुभव है। इसीलिए समझ नहीं आ रहा कि भारत इतना खुलकर ट्रंप और बीबी नेतन्याहू, दोनों के साथ, क्यों खड़ा है। इस्राइलियों

ने आधे यूरोप को नाराज कर रखा है और ट्रंप हर दूसरे दिन पाकिस्तान को लुभाने की कोशिश करते हैं। इस बीच, ट्रंप और व्लादिमीर पुतिन महीने में कम से कम एक बार परस्पर बात करते हैं- तब भी, जब अमेरिका भारत को रूसी तेल न खरीदने को धमका रहा था। ट्रंप चीन दौरे की जल्द ही, कम से कम ईरान संकट से पहले, योजना बना रहे थे-लेकिन बताया जा रहा है ईरान का साथी और सहयोगी चीन, अब ट्रंप और ईरान के बीच मध्यस्थता की पेशकश कर रहा है। इसीलिए आत्मनिर्भरता का मतलब है समझदारी से चुनना, कुछ करना या न करते हुए देशहित में काम करना। इसका अभिप्राय था इस्राइल का अपना दौरा टालना, सिर्फ इसलिए नहीं कि पूरी दुनिया, जिसमें आप भी शामिल हैं, जानती थी कि युद्ध होने वाला है; इसलिए नहीं कि भारत और ईरान के बीच सदियों पुराने रिश्ते हैं, बल्कि इसलिए कि भारत के कुल तेल आयात का 44 प्रतिशत हिस्सा ईरानी नियंत्रण वाले जलक्षेत्र होर्मुज जलसंधि से होकर आता है। इसका अर्थ था कि अबू धाबी के शासक मोहम्मद बिन जायद को फोन करने से बचना, जिनकी इन दिनों अपने कभी के सबसे अच्छे दोस्त रहे सऊदी अरब के मोहम्मद बिन सलमान से बातचीत बंद हैं- सिर्फ इसलिए नहीं कि आप दोनों से तेल खरीदते हैं या पाकिस्तान सऊदी अरब का रणनीतिक साझेदार है, बल्कि इसलिए कि दोनों देशों में बड़ी संख्या में भारतीय आप्रवासी रहते हैं, यूएई में 40 लाख और सऊदी में लगभग 25 लाख। इसका मतलब था कि सोनिया गांधी द्वारा इंडियन एक्सप्रेस में लिखे अपने लेख में ईरान के सुप्रीम लीडर अली खामेनेई की हत्या पर भारत की चुप्पी पर सवाल उठाने का इंतजार नहीं करना- उनकी हत्या के पांच दिन बाद आखिर विदेश सचिव विक्रम मिसरी को महज 2 किमी दूर दिल्ली में स्थित ईरान दूतावास पहुंचने का आदेश दिया गया, जहां उन्होंने भारत की ओर से शोक पुस्तिका पर संदेश लिखा।

इस बीच, विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भी अंततः अपने ईरानी समकक्ष सैयद अब्बास अराघची को फोन किया। शुक्रवार शाम, इस्राइली विदेश मंत्री ने मीडिया को बताया कि प्रधानमंत्री मोदी जो 48 घंटे पूर्व ही इस्राइल से निकले थे, को पता नहीं था कि इस्राइल-अमेरिका ईरान पर कब बमबारी करने वाले हैं।

उम्मीदों के उफान के बीच उपजा विकल्प

पुष्परंजन

हाल ही में, नेपाली राजनीतिक हलकों में एक शब्द वायरल हुआ, 'पॉप्युलिजम'। लोकलुभावनवाद कोई नया शब्द नहीं है। यह शब्द लैटिन में इस्तेमाल, 'पॉपुलस' से आया है, जिसका अर्थ है, 'लोग'। 18वीं शताब्दी के मध्य में रूस के जार को उखाड़ फेंकने के लिए हुए 'नरोदनिकी आंदोलन' ने 'लोकलुभावनवाद' शब्द को एक राजनीतिक रूप दिया। रूसी में 'नरोद' का अर्थ है, 'आदमी'। हालांकि, यह माना जाता है कि अमेरिका में इस शब्द का राजनीतिक विस्तार अमेरिकन पीपुल्स पार्टी द्वारा किया गया था, जिसकी स्थापना 1890 में हुई थी। मोनाश यूनिवर्सिटी, ऑस्ट्रेलिया के प्रोफेसर बेंजामिन मोफिट की पुस्तक 'द ग्लोबल राइज ऑफ पॉपुलिस्म', 2016 में स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा प्रकाशित की गई थी।

इसके प्रकाशन के समय विश्व राजनीति ध्रुवीकरण की अवधि से गुजर रही थी, जिसे ब्रिटेन में ब्रेक्सिट, अमेरिका में डोनाल्ड ट्रम्प का उदय और यूरोप, लैटिन अमेरिका में दक्षिणपंथी व वामपंथी ताकतों के प्रारम्भ और पतन द्वारा चिन्हित किया गया था। लेखक बेंजामिन मोफिट ने राजनीति को ग्लैमर या शैली के रूप में वर्णित किया है, जिसकी पसंद लगभग नेपाली राजनीतिक हस्तियों के समान है। शैली, स्वाद, भोजन, चलने, बोलने या समग्र लोकलुभावन कल्पना के अनुरूप। इस हिमालयी देश में चुनावों ने एक तरह से स्पष्ट जनादेश दिया है, अब केवल घोषणापत्र के वादों को लागू करना बाकी है। नेपाली मतदाताओं ने मुख्यधारा के दलों के भविष्य को लगभग सील कर दिया है। समाजवादी टोपी हर किसी के लिए उपयुक्त है, लेकिन लोकलुभावन टोपी हर किसी के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती है। बालेन, रवि और गगन की तरह हर कोई लोकप्रिय होना चाहता है। क्योंकि, डिजिटल फ्रेम की लोकप्रियता ने जीवन की गुणवत्ता को स्क्रीन के अनुकूल बना दिया है। नेपाली मनःस्थिति हम भारतीयों से भिन्न नहीं है। जितनी जल्दी हम हतोत्साहित होते हैं, उसी त्वरा से हम उत्साहित भी महसूस करते हैं।

राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (रास्वापा) जिसका जन्म 2017 में हुआ था, जो अपने जन्म के छह महीने के भीतर आम चुनाव में चौथी पार्टी के रूप में उभरी थी। अब यही राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी अभूतपूर्व जीत के साथ अति उत्साह में है। इनके शैदाई, 'राम राज्य' के सपने में डूबे हुए हैं। विवादों से घिरे भूतपूर्व पत्रकार रबी लामिछाने और रैपर से राजनेता बने बालेन शाह की जोड़ी ने सोचा नहीं होगा कि संसद में इतनी सीटें आ जाएंगी कि सरकार गठन के लिए किसी दल-जमात की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। नेपाल की राजनीति के तीनों 'बिग बी', नेपाली कांग्रेस के अध्यक्ष गगन थापा, नेकपा एमाले के अध्यक्ष केपी शर्मा ओली और नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी के चेयरमैन प्रचंड ने भी नहीं सोचा था कि निचले सदन 'प्रतिनिधि सभा' में केवल 17, सात, और आठ सीटें क्रमशः मिलेंगी। नेपाल के विश्लेषक इसे 'नयां शक्ति' बोलते हैं। एक तरफ रवि लामिछाने द्वारा बनाया गया रास्वापा है, जिसमें उनका संगठनात्मक प्रभाव है। दूसरी ओर, बालेन की क्रेजिक अभूतपूर्व जीत, रास्वपा की एक उन्मादी लहर पर है।

दोनों महत्वाकांक्षी हैं। वैसी स्थिति में रवि-बालेन संबंध कब तक, कितना निभेगा? बड़ा सवाल है। नेपाली जनता ने इस पार्टी के पक्ष में वोट क्यों दिया? बहुत साफ है, कि मतदाता का धैर्य और विश्वास पुराने नेताओं पर से टूट चुका था। सोशल मीडिया पर विराजे कुछ तुक्केबाज कयास लगाते हैं कि यह चीन का किया धराया है। कुछ को शक अमेरिका पर है। लेकिन, सच यह है कि नेपाल के मतदाताओं ने मत पत्र के जरिये मौन सजा दी है। यह उन्होंने दुनिया भर में दर्ज कराया है, कि बैलेट पेपर पर भरोसा कीजिये। यह पहली बार नहीं है, जब नेपाली राजनीति में एक वैकल्पिक शक्ति की खोज की गई। हर बार जब कोई राजनीतिक बदलाव होता है, तो लोग उत्साहित होते हैं। लेकिन, जब उन अपेक्षाओं को पूरा नहीं किया जाता है तो यह असंतोष और निराशा में रूपांतरित हो जाता है। 2007 से कांग्रेस परिवर्तन के साधन के रूप में उभरी है। 2008 में राजशाही खत्म कर दी गई थी, और तब से नेपाल में पुरानी लिबरल नेपाली कांग्रेस के साथ माओवादी गुटों के अलग-अलग गठबंधन के जरिए पार्लियामेंट्री सरकार रही है। लेकिन, परिणाम क्या निकला? बार-बार सत्ता में आने का अवसर मिलने के बावजूद, कांग्रेस-कम्युनिस्ट जनता की उम्मीदों पर खरे नहीं उतर सके। बजाय इसके, उन्होंने बेरोजगारी और भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया, अर्थव्यवस्था चौपट कर दी।

इस बीच राजावादियों को लगा कि वो मौके पर चौका मार सकते हैं। लेकिन, इस आंधी में वो भी नहीं टिक पाए। ओली का इस तरह से जाना, कहीं न कहीं चीनी कूटनीति की हार भी मानी जाएगी। ओली कुछेक महीने चुप रहे, मगर उनका पिछला ट्रैक रिकार्ड भारत विरोध वाला रहा है। कुछ वैसा ही रुख प्रचंड का रहा था। ये लोग जब-जब घरेलू मोर्चे पर विफल रहे, भारत विरोध का ब्रह्मास्त्र चला देते थे। चीन के बार-बार कहने के बावजूद, नेपाली वामपंथी एक होकर भी नहीं रहे। बाबूराम भट्टाराई ने माओवादियों को छोड़कर एक 'नई शक्ति' बनाने की कोशिश की। लेकिन, वह भी जमीन पर नकार दिए गए। नेपाल में वामपंथ की राजनीति में टूट, विलय बहुतों बार हुआ है। तराई के नेता कब किसके संग सौदेबाजी कर लें, उनका कोई भरोसा नहीं था। तो, पब्लिक कब तक बर्दाश्त करती? इस बार नेपाली संसद में युवा प्रतिनिधियों की संख्या 38 प्रतिशत हुई है।

नाश्ते के समय की ये गलतियां बढ़ा देती हैं हाई बीपी

हाई ब्लड प्रेशर (हाइपरटेंशन) को नियंत्रित करने के लिए अक्सर लोग रात के खाने और नमक पर ध्यान देते हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं कि सुबह का नाश्ता आपके बीपी लेवल को सेट करने में सबसे बड़ी भूमिका निभाता है? हाल ही में हुए एक शोध में बताया गया है कि नाश्ते के समय की जाने वाली कुछ आम गलतियां हाई बीपी के जोखिम को तेजी से बढ़ा सकती हैं। सुबह का ब्रेकफास्ट केवल शरीर को ऊर्जा देने का काम नहीं करता, बल्कि यह हमारे हार्मोनल संतुलन, सोडियम स्तर और रक्त वाहिकाओं की कार्यक्षमता को भी निर्धारित करता है। लेकिन गलत नाश्ता इंसुलिन स्पाइक का कारण बनता है, जिससे शरीर सोडियम को रोकना शुरू कर देता है और धमनियों पर दबाव बढ़ जाता है। अगर आप भी सुबह जल्दबाजी में कुछ भी खा लेते हैं, तो यह आपकी सेहत के लिए नुकसानदायक है।

बेकरी आइटम

सुबह-सुबह ब्रेड-बटर, जैम टोस्ट या चीज सैंडविच जैसे बेकरी उत्पादों का सेवन धमनियों के लिए नुकसानदायक होता है। इनमें मौजूद मैदा और सैचुरेटेड फैट हमारी रक्त वाहिकाओं की अंदरूनी परत को इरिटेट यानी उत्तेजित करते हैं। यह निरंतर उत्तेजना धमनियों को सख्त बना सकती है, जिससे दिल को रक्त पंप करने में अधिक मेहनत करनी पड़ती है और बीपी बढ़ जाता है। इसलिए हाई ब्लड प्रेशर से बचने के लिए अपने नाश्ते की डाइट में बदलाव करना सबसे आसान और प्रभावी तरीका है।

सिर्फ फलों का नाश्ता

कई लोग स्वस्थ रहने के लिए नाश्ते में सिर्फ फल खाते हैं, लेकिन डॉक्टर शालिनी के अनुसार यह भी एक गलती है। फलों में मौजूद फ्रक्टोज का अचानक बढ़ना शरीर में स्ट्रेस हार्मोन्स को सक्रिय कर सकता है। ये हार्मोन रक्त वाहिकाओं को सिकोड़ते हैं, जिससे सीधे तौर पर ब्लड प्रेशर में बढ़ोतरी देखी जाती है। फलों को हमेशा संतुलित मात्रा में अन्य प्रोटीन स्रोतों के साथ ही लेना चाहिए।

रिफाइंड कार्ब्स खतरनाक

नाश्ते में बिस्किट या सिर्फ चाय पीना सेहत के लिए जोखिम भरा हो सकता है। बिस्किट में रिफाइंड कार्ब्स अधिक होते हैं जो शरीर में इंसुलिन स्पाइक कराते हैं। जब इंसुलिन बढ़ता है, तो यह किडनी को अधिक सोडियम रोकने का संकेत देता है, जिससे रक्त का दबाव बढ़ने लगता है। डॉक्टर सलाह देती हैं कि सुबह-सुबह मैदा और चीनी के भारी सेवन से बचना चाहिए। रिफाइंड चीजों की जगह साबुत अनाज और प्रोटीन को जगह दें। आपकी सुबह की ये छोटी सी सावधानी आपको भविष्य की बड़ी कार्डियोवैस्कुलर समस्याओं से सुरक्षित रख सकती है।

प्रोटीन की कमी

नाश्ते में प्रोटीन का सेवन न करना हाई बीपी के खतरे को बढ़ाता है। प्रोटीन में विशेष पेप्टाइड्स पाए जाते हैं जिनमें बीपी को कम करने वाले गुण होते हैं। प्रोटीन शरीर के मेटाबॉलिज्म को भी स्थिर रखता है और इंसुलिन के स्तर को अचानक बढ़ने से रोकता है। नाश्ते में दाल, अंडे या नट्स शामिल करना हृदय स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद होता है।

नमकीन खाना

पोहे या उपमा का स्वाद बढ़ाने के लिए ऊपर से नमकीन डालना सोडियम की मात्रा को तेजी से बढ़ा देता है। अक्सर इन नमकीनों में अजीनोमोटो का भी उपयोग किया जाता है, जो नर्वस सिस्टम और बीपी दोनों के लिए हानिकारक होते है। इसके अतिरिक्त, जल्दबाजी या तनाव में नाश्ता करने से कोर्टिसोल और एड्रिनालिन हार्मोन बढ़ते हैं, जो तत्काल ब्लड प्रेशर को ऊपर ले जाते हैं। खाने की अच्छी गुणवत्ता रखना और इत्मिनान से खाना दोनों ही हृदय को हेल्दी रखने के लिए बहुत जरूरी है।

हंसना मना है

एक दिन संता अपनी भाभी को पिट रहा था, राह चलते लोगो ने पूछा क्यों मार रहे हो इस बेचारी को? संता बोला- मेरी भाभी अच्छी औरत नहीं है, लोगो ने पूछा- क्यों क्या हुवा? संता बोला- यार मेरे सभी दोस्त मोबाइल पर लगे रहते है, और जिसे भी पुछू तुम लोग किस से बात कर रहे हो? तो सब बोलते है तेरी भाभी से।

पति अपनी नाराज पत्नी को रोज फोन करता है..सासूजी- कितनी बार कहा की वो अब तुम्हारे घर नहीं आएगी, फिर क्यों रोज-रोज फोन करते हो? जमाई- सुन कर अच्छा लगता है इसीलिए।

सिर्फ मार्क जुकरबर्ग ही दुनिया का ऐसा अकेला इंसान है..जिसकी मां बोलती है, बेटा टाइम-पास छोड़, Facebook और Whatsapp पर ध्यान दे।

पापा- बेटा तुम पास हो या ना हो मैं तुम्हें बाइक जरूर दिला दूंगा..पप्पू- थैंक्यू पापा जी, पापा- अगर पास हुये तो 'हीरो होन्डा' कॉलेज जाने के लिये, अगर फेल हुये तो 'राजदूत' दूध बेचने के लिये।

सरदार लड़की वालों के यहां रिश्ता लेकर पहुंचा, मां-बाप बोले- हमारी बेटी अभी पढ़ रही है, सरदार बोला- कोई बात नहीं जी, हम एक-दो घंटे बाद आ जायेंगे।

कहानी | सच्चा पुरुषार्थ

समय के साथ ही स्वामी विवेकानंद का ज्ञान और बातें पूरी दुनिया में फैल रही थीं। उनके भाषण और बातों से भारत के लोग ही नहीं, बल्कि विदेशी भी प्रभावित थे। हर कोई उन्हें अपना आदर्श मानने लगा था। स्वामी विवेकानंद की बातों और विचारों से एक विदेशी महिला इतनी प्रभावित हुई कि मन ही मन में उन्होंने स्वामी से शादी करने की ठान ली। वो हर दिन उनके बारे में ही सोचती रहती थी। उस महिला ने स्वामी से मिलने की भी बहुत कोशिश की, लेकिन ऐसा हो नहीं पाया। कुछ समय बाद एक बार वह विदेशी महिला उस प्रोग्राम में पहुंच गई जहां स्वामी विवेकानंद भी मौजूद थे। वो बिना किसी डर के स्वामी के पास पहुंची और बिना किसी डर के कहा, मैं आपसे शादी करना चाहती हूं। महिला की मन की बात को सुनकर स्वामी विवेकानंद ने उनसे सवाल किया कि आखिर आप मुझसे ही शादी क्यों करना चाहती हैं। मुझमें ऐसा क्या आपने देखा है? स्वामी के सवाल का जवाब देते हुए उस विदेशी महिला ने कहा कि आपसे मैं बहुत प्रभावित हूं। आप बड़े ज्ञानी और गुणवान हैं। मैं चाहती हूं कि मेरा बेटा भी बिल्कुल आपके जैसा ही हो। इसी वजह से मैं आपसे शादी करना चाह रही हूं। महिला की इस इच्छा को जानकर स्वामी ने महिला से कहा कि ऐसा होना असंभव है, क्योंकि मैं एक संन्यासी हूं। फिर उन्होंने आगे कहा कि भले ही मैं आपसे शादी नहीं कर सकता, लेकिन आपकी इच्छा को पूरा कर सकता हूं। महिला ने स्वामी से पूछा कि वो कैसे होगा। स्वामी विवेकानंद ने कहा कि आप मुझे ही अपना बेटा मान लीजिए और आपको मां मान लेता हूं। ऐसा करने से आपको मेरे जैसा ही बेटा मिल जाएगा। स्वामी विवेकानंद की बातों को सुनते ही महिला उनके पैरों पर गिर गई। उसने आगे कहा कि आप सचमुच बहुत बुद्धिमान हैं। मुझे आप पर गर्व है। ऐसा करके स्वामी विवेकानंद ने खुद को अच्छा पुरुष साबित किया और सच्चे पुरुषार्थ का उदाहरण दिया। असली पुरुषार्थ वही होता है जब पुरुष के मन में नारी के लिए मां जैसा सम्मान का भाव होता है।

कहानी से सीख: हर पुरुष को महिला को सम्मान के भाव से देखना चाहिए। ऐसा माना भी गया है कि जहां महिला का सम्मान होता है, वहां देवता का वास होता है।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

विद्यार्थी वर्ग सफलता अर्जित करेगा। पठन-पाठन में मन लगेगा। दूर यात्रा की योजना बन सकती है। मनपसंद भोजन का आनंद प्राप्त होगा। वरिष्ठजनों का मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

वृषभ

वाणी पर नियंत्रण रखें। किसी के व्यवहार से क्लेश हो सकता है। पुराना रोग उभर सकता है। दुःखद समाचार मिल सकता है, धैर्य रखें। जोखिम व जमानत के कार्य टालें।

मिथुन

आज धन का निवेश न करें। शत्रु नतमस्तक होंगे। विवाद को बढ़ावा न दें। प्रयास सफल रहेंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आय के स्रोतों में वृद्धि हो सकती है।

कर्क

लेन-देन में सावधानी रखें। शारीरिक कष्ट संभव है। परिवार में तनाव रह सकता है। शुभ समाचार मिलेंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे।

सिंह

रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। सट्टे व लॉटरी से दूर रहें। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। पारिवारिक चिंता बनी रहेगी।

कन्या

अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे। कर्ज लेना पड़ सकता है। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। किसी विवाद में उलझ सकते हैं। चिंता तथा तनाव रहेंगे। जोखिम न उठाएं।

तुला

बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। आय के नए स्रोत प्राप्त हो सकते हैं। व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। प्रमाद न करें।

वृश्चिक

कार्यप्रणाली में सुधार होगा। नई आर्थिक नीति बनेगी। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। पार्टनरों का सहयोग मिलेगा। कारोबारी अनुबंधों में वृद्धि हो सकती है।

धनु

बेचैनी रहेगी। चोट व रोग से बचें। काम का विरोध होगा। तनाव रहेगा। कोर्ट व कचहरी के काम अनुकूल होंगे। पूजा-पाठ में मन लगेगा। तीर्थयात्रा की योजना बनेगी।

मकर

आज धन का निवेश न करें। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। विवाद से क्लेश संभव है। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में लापरवाही न करें। तनाव रहेगा।

कुम्भ

कष्ट, भय, चिंता व बेचैनी का वातावरण बन सकता है। कोर्ट व कचहरी के काम मनोनुकूल रहेंगे। जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। प्रसन्नता रहेगी।

मीन

भवन, दुकान व फैक्टरी आदि के खरीदने की योजना बनेगी। रोजगार में वृद्धि होगी। उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। राज्य के प्रतिनिधि सहयोग करेंगे। कुबुद्धि हावी रहेगी।

वेलकम 4 में फिर नजर आ सकती है उदय शेट्टी और मजनू भाई की जोड़ी

'वेलकम' फ्रेंचाइजी की तीसरी फिल्म 'वेलकम टू द जंगल' का दर्शक बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। फिल्म लंबे समय से अटकी हुई है। इसके इस साल रिलीज होने की उम्मीद है। लेकिन अब 'वेलकम टू द जंगल' की रिलीज से पहले 'वेलकम 4' को लेकर एक बड़ी जानकारी सामने आई है। मेकर्स ने 'वेलकम 4' की पुष्टि कर दी है। इसके बाद अब फैंस को उम्मीद है कि इस फिल्म में उन्हें उदय और मजनू यानी नाना पाटेकर और अनिल कपूर की जोड़ी फिर से नजर आ सकती है।

फ्रेंचाइजी के निर्माता फिरोज नाडियाडवाला ने ये कंफर्म किया है कि 'वेलकम 4' बन रही है। उन्होंने बताया कि अगले अध्याय पर काम शुरू हो चुका है और स्क्रिप्ट फिलहाल अंतिम चरण में है। ई-टाइम्स के साथ बातचीत में फिरोज नाडियाडवाला ने बताया कि चौथी फिल्म अपने पहले की फिल्मों से कहीं अधिक भव्य होगी। उन्होंने कहा कि हम स्क्रिप्ट के अंतिम चरणों में हैं। हम जिस संगीत और एक्शन की योजना बना रहे हैं, वह बहुत बड़ा होगा।

हम मल्टीकल्चरल म्यूजिक पर काम कर रहे हैं। इसमें मिडिल ईस्ट, अफ्रीका, संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन जैसे क्षेत्रों की प्रतिभाएं एक साथ आ रही हैं। इस दौरान निर्माता ने एक ऐसी कहानी का भी संकेत दिया, जिसमें कई विलेन हो सकते हैं। इससे फ्रेंचाइजी के प्रतिष्ठित किरदारों के लिए चुनौतियां और बढ़ जाएंगी। नाडियाडवाला ने कहा कि उदय भाई, मजनू भाई और डॉ. घुंघरू जैसे किरदारों का री-यूनियन, साथ ही एक से अधिक डॉन की मौजूदगी, पर्दे पर धमाकेदार अनुभव करा सकती है। बातचीत के दौरान फिरोड नाडियाडवाला ने 'वेलकम टू द जंगल' की रिलीज में हो रही देरी पर भी बात की। अफवाहों को खारिज करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि फिल्म पूरी हो चुकी है। इस मल्टीस्टारर फिल्म का निर्देशन अहमद खान ने किया है। फ्रेंचाइज की शुरुआत 2007 में 'वेलकम' से हुई थी। फिर 'वेलकम बैक' आई, जिसमें जॉन अब्राहम की एंट्री हुई, जबकि अक्षय कुमार फिल्म से बाहर हो गए। अब तीसरी फिल्म 'वेलकम टू द जंगल' में अक्षय की वापसी हुई है। लेकिन नाना पाटेकर इस फिल्म का हिस्सा नहीं हैं। हालांकि, इस बार फिल्म में एक बड़ी स्टारकास्ट नजर आएगी। 'वेलकम टू द जंगल' 26 जून 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

बॉलीवुड | गपशप

बॉलीवुड | पुरस्कार

अमोल पालेकर को मिलेगा मेटा लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड

अभिनेता और थिएटर आर्टिस्ट अमोल पालेकर को अब एक और सम्मान मिला है। उन्हें थिएटर और सिनेमा में उनके असाधारण योगदान के लिए 21वें महिंद्रा एक्सीलेंस इन थिएटर अवार्ड्स में मेटा लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। इसकी आज घोषणा की गई है। मेटा की ओर से जारी बयान में कहा गया कि कई दशकों के अपने करियर में अमोल पालेकर अपनी विशिष्ट कलात्मक शैली और मंच व स्क्रीन पर कहानी कहने के प्रति समर्पण के लिए जाने जाते रहे हैं। एक अभिनेता, निर्देशक और रचनात्मक दूरदर्शी के रूप में उनके काम ने समकालीन भारतीय प्रदर्शन पर अमिट छाप छोड़ी है। अमोल पालेकर 1970 के दशक में 'छोटी सी बात', 'चितचोर', 'बातों बातों में' और 'गोलमाल' जैसी फिल्मों के लिए जाने जाते हैं। थिएटर महोत्सव और पुरस्कारों का 21वां संस्करण 19 से 25 मार्च तक कमानी सभागार और श्री राम सेंटर सभागार में 10 चयनित प्रस्तुतियों का मंचन करेगा। सप्ताह भर चलने वाले इस महोत्सव में पौराणिक कथाओं और भक्ति से लेकर लिंग, पहचान, राजनीति और सामाजिक परिवर्तन जैसे विषयों पर चर्चा की जाएगी। मेटा 13 प्रतिस्पर्धी श्रेणियों में पुरस्कार प्रदान करेगा। इनमें निर्माण, निर्देशन, मंच डिजाइन, साउंड और म्यूजिक डिजाइन, लाइट डिजाइन, कॉस्ट्यूम डिजाइन, बेस्ट एक्टर (पुरुष और महिला), सपोर्टिंग एक्टर (पुरुष और महिला), ओरिजिनल स्टोरी, समूह और कोरियोग्राफी शामिल हैं। पुरस्कार विजेताओं की घोषणा 25 मार्च को कमानी सभागार में आयोजित एक भव्य समापन समारोह में की जाएगी। इस साल के जूरी मेंबर्स में मशहूर थिएटर निर्देशक अमल अल्लाना, थिएटर निर्देशक और शिक्षाविद अनुराधा कपूर, प्रख्यात मंच और पटकथा अभिनेता राजित कपूर, प्रसिद्ध नाटककार, निर्देशक और अभिनेता सतीश अलेकर और अनुभवी अभिनेत्री, गायिका और थिएटर आर्टिस्ट इला अरुण शामिल हैं।

पलाश मुछाल की फिल्म में हुई अभिनव शुक्ला की इंट्री

पलाश मुछाल ने अपनी एक अनाम फिल्म की घोषणा कुछ दिनों पहले की है। इस फिल्म को वही निर्देशित करेंगे। इसकी कहानी एक आम आदमी की जिंदगी पर आधारित होगी। फिल्म में लीड रोल एक्टर श्रेयस तलपदे निभाएंगे। अब इस फिल्म में एक टीवी एक्टर भी शामिल हो गया है। इस बारे में सोशल मीडिया के जरिए पलाश मुछाल ने ही जानकारी साझा की है। टीवी एक्टर के साथ एक फोटो भी पोस्ट की है।

पलाश मुछाल की फिल्म में टीवी एक्टर अभिनव शुक्ला एक अहम किरदार निभाएंगे। मंगलवार देर रात पलाश मुछाल ने अभिनव के साथ तस्वीर साझा की और फिल्म में उनका स्वागत किया। इस फिल्म में डेजी शाह भी नजर आएंगी। पलाश मुछाल डायरेक्शन में आने से पहले बतौर म्यूजिक कंपोजर बॉलीवुड में सक्रिय थे। फिर वह निर्देशक की भूमिका में आए। अब तक कई फिल्में बना चुके हैं। पलाश ने अर्ध और काम चालू है जैसी फिल्में बनाई हैं। इन दोनों फिल्मों में राजपाल यादव ने मुख्य भूमिका निभाई थी। पिछले साल के आखिर में क्रिकेटर स्मृति मंधाना और कंपोजर पलाश मुछाल के शादी का मामला खूब सुर्खियों में रहा। इस साल की शुरुआत में स्मृति के दोस्त ने पलाश पर पैसों की धोखाधड़ी का आरोप लगाया। पलाश ने भी मानहानि का मुकदमा ठोका है। इन सभी बातों के बीच वह अपनी अपकमिंग फिल्म से जुड़े अपडेट लगातार साझा कर रहे हैं।

खीरे को घिसने पर निकलने वाला सफेद झाग क्या है? सच्चाई है अजीबो-गरीब

गर्मियों के मौसम में खीरा सलाद और ठंडक देने वाले फूड के रूप में काफी पसंद किया जाता है। अक्सर आपने देखा होगा कि कई लोग खीरे को काटने से पहले उसका ऊपरी सिरा काटकर उसी टुकड़े से खीरे पर रगड़ते हैं। ऐसा करते ही खीरे से सफेद झाग जैसा पदार्थ निकलने लगता है। बहुत से लोग इसे केवल एक परंपरा मानते हैं, लेकिन इसके पीछे एक वैज्ञानिक कारण भी बताया जाता है। दरअसल, खीरे में प्राकृतिक रूप से कुकुर्बिटासिन नाम का एक रसायन पाया जाता है। यही तत्व खीरे में हल्की कड़वाहट पैदा कर सकता है। जब खीरे का सिरा काटकर उसे उसी हिस्से से रगड़ा जाता है, तो यह कड़वा तत्व झाग के रूप में बाहर निकलता हुआ दिखाई देता है। इसी वजह से कई लोग मानते हैं कि ऐसा करने से खीरे की कड़वाहट कम हो जाती है। हालांकि कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि यह झाग खीरे के अंदर मौजूद रस और प्राकृतिक कंपाउंड के आपस में रिएक्शन से बनता है। खीरे की ऊपरी परत में मौजूद ये तत्व रगड़ने पर बाहर निकलते हैं, जिससे झाग जैसा दिखने लगता है। इसलिए यह पूरी तरह कोई नुकसानदेह चीज नहीं होती।

इसके अलावा यह भी माना जाता है कि खीरे का सिरा घिसने से उसका स्वाद थोड़ा बेहतर हो सकता है, खासकर तब जब खीरा हल्का कड़वा हो। हालांकि वैज्ञानिक रूप से यह जरूरी नहीं है कि हर बार ऐसा करने से कड़वाहट पूरी तरह खत्म हो जाए। फिर भी कई घरों में यह तरीका सालों से अपनाया जा रहा है और लोग इसे खीरे को खाने से पहले की एक छोटी लेकिन दिलचस्प प्रक्रिया मानते हैं।

अजब-गजब | यहां मनाया जाता था खौफनाक रिवाज!

ये लोग बीमार रिश्तेदार को खिलाते थे जांघ का ताजा मांस

चीन के प्राचीन इतिहास में एक ऐसा रिवाज था, जिसे सुनकर आज की पीढ़ी की रूह कांप जाती है। इसे 'गे गु लियाओ किन' कहा जाता था, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'अपनी जांघ से मांस काटकर माता-पिता को ठीक करना'। यह filial piet4 (माता-पिता के प्रति अत्यधिक भक्ति) का सबसे एक्सट्रीम रूप था। जिसमें बच्चे, खासकर बेटियां या बहू अपने बीमार माता-पिता, सास-ससुर या पति को बचाने के लिए अपनी जांघ (या कभी-कभी हाथ, लीवर, छाती) से मांस का टुकड़ा काटकर सूप, दवा या केक बनाकर उन्हें खिलाते थे।

यह प्रथा pre-Qin काल से शुरू हुई, लेकिन तांग राजवंश (618-907 ई।) के बाद बहुत लोकप्रिय हो गई थी। तांग काल में वांग जहिडाओ नामक व्यक्ति ने अपनी मां को टीबी से बचाने के लिए जांघ से करीब 250 ग्राम मांस काटा और उसे पकाकर खिलाया। बताया जाता है कि इसके बाद मां ठीक हो गई थी और सरकार ने उन्हें सम्मानित किया था। तांग से लेकर सॉन्ग, युआन, मिंग तक यह प्रथा जारी रही। सरकार ने इसे प्रोत्साहित किया, ऐसे लोगों को ऑफिशियल टाइटल, टैक्स छूट या सरकारी नौकरी मिलती थी। यह सोशल मोबिलिटी का रास्ता बन गया। शादी-ब्याह में भी ऐसी 'भक्ति' दिखाने वाले को बेहतर रिश्ते मिलते थे।

एंटीबायोटिक्स के आने से पहले टीबी जैसी बीमारियां मौत का फरमान थी। डॉक्टर कहते थे कि मांस खाने से ताकत मिलती है। युद्ध, अकाल या गरीबी में जानवरों का मांस नहीं मिलता था, तो खुद का मांस 'सब्स्टीट्यूट' बन जाता था। तांग काल के चेन जांगकिर ने 'बेनकाओ शी यी' में लिखा कि 'इंसानी मांस टीबी ठीक करता है'। इससे आम लोग इसे मानने लगे। लेकिन असल वजह मेडिकल बिलीफ से ज्यादा अंधविश्वास था।उस दौर में माता-पिता की सेवा सबसे बड़ा धर्म माना जाता था। खुद का शरीर 'माता-पिता से मिला' माना जाता था, लेकिन बीमारी में इसे 'उपयोग' करना सच्ची भक्ति समझा जाता था। यह प्रथा महिलाओं में ज्यादा थी क्योंकि उस समाज में बहू को सास-ससुर की सेवा करनी पड़ती थी। कई लोकल गजेटियर में दर्ज है कि महिलाएं जांघ से मांस काटकर सास को खिलाती थी। लियाओ काल की कब्र में मिली पेंटिंग में एक महिला को चाकू से जांघ काटते दिखाया गया है। यह प्रथा युआन काल में प्रतिबंधित हुई, मिंग में कम हुई लेकिन मिंग-किंग तक जारी रही। यहां तक कि 20वीं सदी में भी, कै युआनपेई, ली होंगझांग के बेटे, जियांग बैली जैसे लोग अपनी मां के लिए ऐसा कर चुके हैं।

जन्मदिन नहीं जनविश्वास का जलसा

सरोजनीनगर में आभार दिवस बना विकास और जनसंपर्क का महापर्व

» डॉ. राजेश्वर सिंह के नेतृत्व में डिजिटल एजुकेशन, महिला सशक्तिकरण और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सरोजनीनगर ने बढ़ाया एक और कदम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लखनऊ की सियासत में अक्सर जन्मदिन केवल औपचारिक कार्यक्रम बनकर रह जाते हैं लेकिन इस बार सरोजनीनगर में जो दृश्य देखने को मिला उसने राजनीतिक आयोजनों के मायने ही बदल दिए। जब विधायक राजेश्वर सिंह के आवास पर आभार दिवस का आयोजन हुआ तो यह सिर्फ जन्मदिन की रस्म नहीं रहा बल्कि जनभागीदारी विकास और राजनीतिक संवाद का एक बड़ा मंच बन गया। सेक्टर-के आशियाना स्थित उनके आवास पर सुबह से ही लोगों की भीड़ उमड़नी शुरू हो गई थी और देखते-देखते यह संख्या दस हजार से भी पार पहुंच गई। देर रात तक शुभकामनाओं का सिलसिला चलता रहा और पूरे इलाके में मेले जैसा माहौल बना रहा।

इस आयोजन की खासियत यह रही कि इसे केवल उत्सव तक सीमित नहीं रखा गया बल्कि विधायक राजेश्वर सिंह ने इसे विकास योजनाओं की नई शुरुआत के साथ जोड़ा। मंच से कई ऐसी पहलें सामने आईं जिनका सीधा संबंध शिक्षा, युवाओं और महिलाओं के सशक्तिकरण से है। इसी क्रम में तीन नए आरबीएस डिजिटल एजुकेशन एंड यूथ एम्पावरमेंट सेंटर का लोकार्पण किया गया। इन सेंटरों के जरिए युवाओं को कंप्यूटर शिक्षा, डिजिटल स्किल्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित प्रशिक्षण देने की योजना है। पहले से स्थापित 14 सेंटरों के साथ यह पहल अब सरोजनीनगर में डिजिटल शिक्षा के नए अध्याय की शुरुआत मानी जा रही है।

जनता के विश्वास और सहयोग की कहानी है सरोजनी नगर

कार्यक्रम के अंत में विधायक राजेश्वर सिंह ने कहा कि पिछले चार वर्षों की यह यात्रा केवल उपलब्धियों का आंकड़ा नहीं, बल्कि जनता के विश्वास और सहयोग की कहानी है। उन्होंने यह भी दोहराया कि उनका लक्ष्य सरोजनीनगर को उत्तर प्रदेश के सबसे विकसित और सशक्त विधानसभा क्षेत्रों में शामिल करना है, जहां शिक्षा, रोजगार, सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण समान रूप से आगे बढ़ें। कुल मिलाकर यह आयोजन एक राजनीतिक जन्मदिन से कहीं ज्यादा बड़ा साबित हुआ। यह ऐसा मंच बन गया जहां जनप्रतिनिधि और जनता आमने-सामने थे विकास की योजनाएं सामने थीं और भविष्य की दिशा तय करने का संवाद भी। सरोजनीनगर की राजनीति में आभार दिवस ने यह संदेश जरूर दिया कि अगर राजनीति में जनसंपर्क और विकास साथ-साथ चलें तो उत्सव भी जनभागीदारी का उत्सव बन सकता है।

43 स्कूलों में स्मार्ट क्लासेज

शिक्षा के क्षेत्र में भी पिछले चार वर्षों की उपलब्धियों को सामने रखा गया। विधायक राजेश्वर सिंह के प्रयासों से क्षेत्र के 43 विद्यालयों में स्मार्ट क्लासेस शुरू की जा चुकी हैं। डिजिटल कंटेंट और आधुनिक तकनीक के जरिए पढ़ाई का यह माडल अब धीरे-धीरे सरोजनीनगर के सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूलों में नई पहचान बना रहा है। इसी कड़ी में मेधावी छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए 25 विद्यार्थियों को लैपटॉप और 50 छात्रों को साइकिल दी गई। अब तक लगभग 1700 से अधिक विद्यार्थियों को इस प्रकार सम्मानित किया जा चुका है। कार्यक्रम में सुरक्षा और सामाजिक जागरूकता का संदेश भी दिया गया। सेफ सरोजनीनगर कैंपेन के तहत एक हजार हेलमेट वितरित किए गए। इसका उद्देश्य युवाओं को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक करना है। इस अभियान के जरिए यह संदेश देने की कोशिश की गई कि विकास केवल इमारतों और योजनाओं का नाम नहीं बल्कि नागरिकों की सुरक्षा और जिम्मेदारी से भी जुड़ा होता है।

10 नये तारा शक्ति केन्द्र

महिला सशक्तिकरण को भी इस कार्यक्रम का प्रमुख आधार बनाया गया। विधायक राजेश्वर सिंह ने 10 नए तारा शक्ति सिलाई केंद्र शुरू करने की घोषणा की। इससे पहले क्षेत्र में 162 केंद्र स्थापित किए जा चुके हैं और इनके माध्यम से 1700 से अधिक सिलाई मशीनें वितरित की गई हैं। इन केंद्रों ने कई महिलाओं को घर बैठे रोजगार का रास्ता दिखाया है। यही कारण है कि कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल हुईं और उन्होंने इसे अपने आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में अहम कदम बताया।

वृक्षारोपण अभियान से की शुरुआत

पर्यावरण संरक्षण को भी इस आयोजन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया गया। जन्म दिन के अवसर पर कदंब के पौधे लगाकर वृक्षारोपण अभियान की शुरुआत की गयी और नेट-जीरो सरोजनीनगर के लक्ष्य को आगे बढ़ाने की बात कही। इसके तहत क्षेत्र में बड़े स्तर पर पौधारोपण की योजना तैयार की जा रही है। इसी के साथ युवाओं को खेल और सामाजिक गतिविधियों से जोड़ने के लिए 10 नए यूथ क्लब स्थापित करने की घोषणा भी की गई। पहले से मौजूद 282 स्पोर्ट्स क्लबों के साथ यह पहल युवाओं को सकारात्मक दिशा देने की कोशिश मानी जा रही है। स्थानीय सुविधाओं को मजबूत करने की दिशा में भी कुछ घोषणाएं की गईं। क्षेत्र के पांच मंदिरों में हैंडपंप लगाने की घोषणा के साथ यह जानकारी दी गई कि अब तक 360 हैंडपंप स्थापित किए जा चुके हैं। इसके अलावा दो सौ से अधिक मंदिरों में सोलर लाइट, बैठने की व्यवस्था और मरम्मत कार्य भी कराया गया है। कार्यक्रम के दौरान विधायक राजेश्वर सिंह ने गौरी स्थित एक वृद्धाश्रम में राशन वितरित कर अन्नदान भी किया जिससे आयोजन को सामाजिक संवेदना का रंग भी मिला।

फैक्ट्री में लगी भीषण आग, 26 कर्मचारी झुलसे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नोएडा। दिल्ली से सटे नोएडा में सेक्टर-4 स्थित एक बिजली का मीटर बनाने वाली कंपनी में आज सुबह भीषण आग लग गई। आग इतनी भयावह थी कि पूरी इमारत धुएं के गुबार में तब्दील हो गई। हादसे के वक्त फैक्ट्री के अंदर 240 कर्मचारी काम कर रहे थे, जिनमें से कई लोग आग की लपटों के बीच फंस गए।

घायलों को एम्बुलेंस के माध्यम अस्पताल में भर्ती कराया गया है। आग लगने के बाद धुए का गुबार कई किलो मीटर दूर से देखा जा सकता है। ये भीषण आग बी-40 कैपिटल पावर सिस्टम लिमिटेड नाम की कंपनी मे लगी है। आज सुबह करीब 5:30 बजे अचानक ये आग लग गई। जहां आग लगी, वो तीन मंजिला इमारत है जहां बिजली के मीटर बनाने का काम किया जाता है। जिससे हड़कंप मच गया। अपनी जान बचाने में 26 कर्मचारी गंभीर रूप से घायल हो गए हैं।

आईपीएल 2026 का कार्यक्रम जारी

» पहले चरण में होंगे 20 मुकाबले, आरसीबी और एसआरएच के बीच होगा ओपनिंग मैच

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आईपीएल 2026 के पहले चरण का कार्यक्रम जारी हो चुका है। बीसीसीआई ने 19वें सीजन के शुरुआती मुकाबलों का कार्यक्रम घोषित किया। दुनिया की सबसे लोकप्रिय टी20 फ्रेंचाइजी लीग का यह सीजन 28 मार्च से शुरू होगा और पहले चरण के मुकाबले 12 अप्रैल तक खेले जाएंगे। टूर्नामेंट का पहला मैच 28 मार्च को बंगलूरू के एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम में खेला जाएगा, जहां गत चैंपियन रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) का सामना सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) से होगा।

आरसीबी की टीम इस बार अपने खिताब का बचाव करने उतरेगी। आरसीबी ने 2025 में पंजाब किंग्स को हराकर पहली बार आईपीएल का खिताब जीता था। पहले चरण में कुल 20 मैच खेले जाएंगे। ये मुकाबले 10 अलग-अलग शहरों में आयोजित होंगे। इनमें बंगलूरू, मुंबई, गुवाहाटी, न्यू चंडीगढ़, लखनऊ, कोलकाता, चेन्नई, दिल्ली, अहमदाबाद और हैदराबाद शामिल हैं। इस अवधि में चार डबल-हेडर भी होंगे। डबल-हेडर के दौरान दो मैच एक ही दिन खेले जाएंगे। दोपहर का मैच 3:30 बजे और शाम का मैच 7:30 बजे शुरू होगा। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु अपने 5 घरेलू मैच बंगलूरू में और 2 मैच रायपुर में खेलेगी। पंजाब किंग्स के 4 घरेलू मैच न्यू चंडीगढ़ में और 3 मैच धर्मशाला में होंगे। राजस्थान रॉयल्स के 3 घरेलू मुकाबले गुवाहाटी में और 4 मैच जयपुर में खेले जाएंगे। बंगलूरू में होने वाले मैच फिलहाल राज्य सरकार की विशेषज्ञ समिति की मंजूरी पर निर्भर करेंगे। कर्नाटक सरकार द्वारा गठित एक्सपर्ट कमेटी 13 मार्च 2026 को एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम का निरीक्षण करेगी। इस दौरान मैच डे की तैयारियों का पूरा मॉक डेमो किया जाएगा।

हार्दिक पर तिरंगे के अपमान का आरोप शिकायत दर्ज

बंगलूरू। भारत की टी20 वर्ल्डकप जीत के जश्न के बाद स्टार ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या एक नए विवाद में घिर गए हैं। उनके खिलाफ राष्ट्रीय ध्वज के कथित अपमान को लेकर शिकायत दर्ज कराई गई है। यह शिकायत पुणे के वकील वाजिद खान बिडकर ने दी है। उन्होंने पुलिस को लिखित आवेदन सौंपकर क्रिकेटर के खिलाफ जांच और कार्रवाई की अपील की है। शिकायत के मुताबिक, भारत की जीत के बाद वीडियो में पांड्या को कंधे पर तिरंगा लपेटकर मैदान पर दौड़ते और डांस करते हुए देखा जा सकता है। एक वीडियो में पांड्या अपनी गर्लफ्रेंड के साथ मंच पर लेटे हुए दिखाई देते हैं, जबकि उस समय भी उनके कंधे पर तिरंगा लिपटा हुआ था। शिकायतकर्ता का कहना है कि इस तरह का व्यवहार राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान के खिलाफ है। उन्होंने कहा, मैंने शिवाजी नगर पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई है।

ईरान ने दबा दिया पैनिक बटन, मचा हाहाकार

अब बिजनेस और बैंकिंग पर वार पेट्रोल प्राइस हाइक से मचेगी हाहाकार

अमेरिकी बमों की बारिश से बीती रात दहला ईरान भयंकर तबाही

1250 से ज्यादा ईरान में नागरिकों के हताहत होने की सूचना है अमेरिकी हवाई हमलों में

ईरान ने बदली रणनीति अब इजरायली कंपनियों के डाटा सेंटर और बैंकिंग सिस्टम पर करेगा वार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। 12 दिनों के युद्ध के बाद जंग अब धीरे धीरे अपना रंग बदल रही है। नागरिकों के खून और सैन्य ठिकानों के तबाह होने के बाद टारगेट बदले जा रहे हैं और जंग को और खतरनाक मोड में लड़ा जाना तय पाया गया है। अमेरिका इजरायल के लगातार अटैक से विचलित हुए बिना ईरान ने जंग को समुद्री ठिकानों के साथ बैंकिंग और बिजनेस ठिकानों की तरफ धकेल दिया है।

ईरान किसी भी कीमत पर पेट्रोल प्राइस हाइक कर पश्चिम में हाहाकार मचाना चाहता है। ईरान तेल की कीमतों को प्रति बैरल 200 डालर तक ले जाना चाहता है। वह जानता है कि उसके ऐसा करने से जनता का दबाव सरकारों पर आयेगा और तब सरकारें घुटनों पर आने में तनिक भी देर नहीं लगाएंगी। वहीं अमेरिका और इजरायल बिना देरी किये ईरान पर बमों की बारिश करने में तनिक भी तरस नहीं खा रहे। शायद ही ईरान का ऐसा कोई शहर बाकी होगा जहां अमेरिकी बमों के निशान न दिखे। ईरान के संदर्भ में अमेरिका और इजरायल के तमाम पूर्वनुमान गलत साबित हुए। 12 दिन की धुंआधार जंग के बाद भी ईरान में न तो पालिटिक्ल् सिस्टम बदला और न ही उसने हार मानी। हां ईरान को जानी और माली नुकसान जरूर झेलना पड़ा है। इन सब चीजों के बरअक्स ईरान के नये सर्वोच्च लीडर आयुत्तला मुजत्बा खामनेई ने अपने ईरादे जाहिर करते हुए जंग में नरमी के किसी भी एंगल को नाकार दिया है और कहा है कि अब हथियारों की भाषा में ही अमरीका से बात होगी।

भारतीय वार एनालिस्ट का मानना है कि ईरान अब केवल सैन्य टकराव तक सीमित नहीं रहना चाहता। युद्ध के दौरान लगातार दबाव के बावजूद तेहरान ने अपने राजनीतिक ढांचे को कायम रखा है। यही वजह है कि अब वह ऐसी रणनीति की ओर बढ़ता दिख रहा है जिससे विरोधी देशों की आर्थिक प्रणाली पर असर डाला जा सके। सूत्रों और विश्लेषणों के अनुसार ईरान की नजर अब इजरायल से जुड़े डिजिटल और आर्थिक ढांचे पर है। इसमें डाटा सेंटर, वित्तीय नेटवर्क और व्यापारिक प्लेटफार्म जैसे संवेदनशील क्षेत्र शामिल बताए जा रहे हैं। अगर इस तरह के हमले होते हैं तो उनका असर केवल एक देश तक सीमित नहीं रहेगा बल्कि वैश्विक वित्तीय नेटवर्क भी प्रभावित होगा।

अब आर्थिक नसों पर वार

एलपीजी संकट और बढ़ती चिंता तेल बाजार को हथियार बनाने की रणनीति

इस युद्ध का सबसे बड़ा प्रभाव ऊर्जा बाजार पर पड़ता दिखाई दे रहा है। मध्य पूर्व दुनिया के तेल भंडार का केंद्र है और यहां का हर संघर्ष वैश्विक बाजार को हिला देता है। विशेषज्ञों का कहना है कि अगर संघर्ष लंबा खिंचता है तो कच्चे तेल की कीमतों में तेज उछाल आ सकता है। सिर्फ 12 दिनों की जंग में क्रूड आयल की कीमतों में दोगुना उछाल दर्ज किया जा चुका है। ऐसे में जैसे जैसे जंग आगे बढ़ेगी वैसे वैसे कच्चे तेल की कीमतों में इजाफा होगा। विश्लेषकों का अनुमान है कि तेल की कीमतें तेजी से ऊपर जाने से वैश्विक महंगाई बढ़ेगी और यदि ऐसा होता है तो परिवहन उद्योग और रोजमर्रा की वस्तुओं की कीमतों का क्या हश्र होगा इसका अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है।

12 दिन की जंग और बदलती रणनीति

बारह दिनों के संघर्ष ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यह युद्ध केवल सैन्य शक्ति की परीक्षा नहीं है। इसमें राजनीतिक इच्छाशक्ति आर्थिक रणनीति और तकनीकी क्षमताएं भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। युद्ध शुरू होने के समय कई विशेषज्ञों का मानना था कि संघर्ष जल्दी समाप्त हो सकता है या किसी बड़े राजनीतिक बदलाव की संभावना बन सकती है। लेकिन अभी तक ऐसा कोई संकेत नहीं मिला है।

समुद्र बनता जंग का नया मैदान

अमेरिका इजरायल और ईरान के बीच बढ़ते तनाव ने खाड़ी क्षेत्र के समुद्री रास्तों को एक नए युद्धक्षेत्र में बदल दिया है। अमेरिका ने अपने शक्तिशाली जंगी बेड़े को समुद्र में उतारकर ईरान पर दबाव बनाने की रणनीति अपनाई है। वहीं ईरान ने भी जवाबी तैयारी के तौर पर अपनी पनडुब्बियों और तेज़ गति वाली नौकाओं की मच्छर फ्लीट को सक्रिय कर दिया है। अमेरिका की नौसैनिक ताकत दुनिया में प्रभावशाली मानी जाती है। अमेरिकी नौसेना के पास विशाल एयरक्राफ्ट कैरियर परमाणु पनडुब्बियां और अत्याधुनिक विध्वंसक जहाज हैं जो समुद्र में लंबे समय तक युद्ध संचालन करने में सक्षम हैं। इन जहाजों पर तैनात लड़ाकू विमान और मिसाइल सिस्टम किसी भी विरोधी को दूर से निशाना बनाने की क्षमता रखते हैं। खाड़ी क्षेत्र में अमेरिकी बेड़ों की मौजूदगी का मकसद समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा और रणनीतिक दबाव बनाना माना जाता है।दूसरी तरफ ईरान की नौसैनिक रणनीति अलग ढंग की है। तकनीकी और संसाधनों के मामले में भले ही वह अमेरिका जितना शक्तिशाली न हो लेकिन उसने असमंजित युद्ध की रणनीति विकसित की है। ईरान की नौसेना और रिवोल्यूशनरी गार्ड की समुद्री इकाइयां तेज़ गति वाली छोटी नौकाओं तटीय मिसाइलों और पनडुब्बियों का इस्तेमाल कर विरोधी जहाजों को चुनौती देने की क्षमता रखती हैं। इन्हीं छोटी लेकिन तेज़ नौकाओं को अक्सर मच्छर फ्लीट कहा जाता है जो झुंड बनाकर बड़े जहाजों के लिए खतरा पैदा कर सकती हैं। ईरान की सबसे बड़ी ताकत समुद्री सुरंगें यानी माइन बिछाने की क्षमता भी मानी जाती है। खाड़ी क्षेत्र के संकरे समुद्री रास्तों में अगर बड़ी संख्या में बारूदी सुरंगें बिछा दी जाएं तो यह किसी भी नौसेना के लिए बड़ी चुनौती बन सकता है।

शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती से मिलने पहुंचे अखिलेश यादव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव, राजधानी लखनऊ में शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती से मुलाकात करने पहुंचे।

स्वामी अविमुक्तेश्वरानंदी से मिलने के बाद समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा, हम आज यहां उनका आशीर्वाद लेने आए हैं ऐसे समय में जब सोशल मीडिया इतना शक्तिशाली है, हर व्यक्ति विवाद पैदा करने के लिए तैयार है हालांकि, मैं यहां शंकराचार्य से आशीर्वाद लेने आया हूं।

माघ मेला 2026 के दौरान जनवरी में प्रयागराज में प्रशासन और पुलिस के साथ शंकराचार्य के विवाद के बाद कई नेता उनसे मुलाकात कर चुके हैं। दावा है कि अखिलेश के शंकराचार्य से मिलने पर राज्य में इस मुद्दे पर सियासत और ज्यादा गर्म हो सकती है।

ईरान-इजरायल युद्ध के बीच भारत पहुंचा जहाज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। ईरान और इजरायल युद्ध का असर पूरी दुनिया के बाजार पर पड़ रहा है। इस बीच, भारत का एक जहाज शेलॉन्ग स्ट्रेट ऑफ होर्मुज से होते हुए आज तड़के मुंबई पहुंचा है. गौरतलब है कि होर्मुज से ईरान ने चीन के अलावा किसी अन्य देश के जहाजों को गुजरने की इजाजत नहीं दी है। शेलॉन्ग जहाज बड़ी जद्दोजहद के बाद भारत पहुंचा है। जहाज शेलॉन्ग में 1 लाख 35 हजार मीट्रिक टन क्रूड ऑयल है।

शेलॉन्ग आज तड़के मुंबई पहुंचा है

गौरतलब है कि स्ट्रेट ऑफ होर्मुज के जरिए ही दुनिया को आधे से ज्यादा कच्चे तेल की सप्लाई होती है. गौरतलब है कि मुंबई में जहां ये जहाज डॉक है वहां से इसमें मौजूद तेल को माहुल रिफाइनरी भेजा जाता है. इस तेल को पाइप के जरिए रिफाइनरी में भेजा जाता है. बताया जा रहा है कि ये जहाज होर्मुज होते हुए यहां पहुंचा है। गौरतलब है कि ईरान, इजरायल और अमेरिका के बीच युद्ध के कारण दुनियाभर में तेल और गैस का संकट बढ़ गया है. स्ट्रेट ऑफ होर्मुज से ईरान ने केवल चीनी जहाजों को गुजरने की अनुमति दी है. यही नहीं, ईरान कई देशों के तेल टैंकरों पर भी हमला किया है. जिससे मुश्किल और बढ़ी है।

फारूक अब्दुल्ला के सिर पर तानी पिस्तौल, बाल-बाल बचे

» विपक्ष ने उठाया सवाल, चली गोली! कांप उठा जम्मू-कश्मीर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। जम्मू के ग्रेटर कैलाश इलाके में बुधवार रात एक शादी समारोह के दौरान उस वक्त अफरा-तफरी मच गई, जब एक सशस्त्र व्यक्ति ने नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला पर हमला करने की कोशिश की। इस घटना में फारूक अब्दुल्ला, जम्मू-कश्मीर के उपमुख्यमंत्री सुरिंदर चौधरी और मुख्यमंत्री के सलाहकार नासिर असलम वानी बाल-बाल बच गए।

इसपर विपक्ष ने सवाल उठाया है। अधिकारियों ने बताया कि यह घटना उस समय हुई जब अब्दुल्ला, उपमुख्यमंत्री चौधरी और मुख्यमंत्री के सलाहकार नासिर असलम वानी शहर के बाहरी इलाके में स्थित ग्रेटर कैलाश क्षेत्र के समारोह स्थल से निकल रहे थे। आरोपी की पहचान कमल सिंह जामवाल के रूप में हुई है, जो पुरानी मंडी का निवासी है। वह पिस्तौल लेकर अब्दुल्ला के पीछे पहुंचा और गोली चला दी।जम्मू कश्मीर पुलिस के सुरक्षा शाखा के दो अधिकारियों—एक निरीक्षक और एक उप निरीक्षक ने उसे काबू कर लिया।

उपमुख्यमंत्री चौधरी ने इस घटना को सुरक्षा में चूक बताया, जबकि पुलिस ने कहा कि विस्तृत जांच जारी है। अधिकारियों ने बताया कि जामवाल की उम्र 70 वर्ष से अधिक है और हमले के वक्त वह नशे की हालत में था। उन्होंने बताया कि सतर्क कर्मियों द्वारा उसका हथियार छीने जाने और जमीन पर गिराए जाने से पहले उसने एक गोली चलाई।

अधिकारियों ने यह भी बताया कि गोलीबारी में कोई घायल नहीं हुआ। हमले पर नाराजगी व्यक्त करते हुए जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा, अल्लाह मेहरबान है। मेरे पिता बाल-बाल बच गए। उन्होंने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि फिलहाल विवरण अस्पष्ट हैं, लेकिन जो ज्ञात है वह यह है कि एक व्यक्ति भरी हुई पिस्तौल के साथ बिल्कुल करीब आकर गोली चलाने में कामयाब हो गया।

नेता प्रतिपक्ष केंद्र सरकार से पूछे तीखे सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने ऊर्जा सुरक्षा मामले में केंद्र सरकार को घेरा है। उन्होंने संकट से निपटने के लिए अग्रिम तैयारी किए जाने का आह्वान करते हुए कहा, अगर ऐसा नहीं किया गया, तो भविष्य में करोड़ों लोगों को नुकसान उठाना पड़ेगा।

राहुल का ये बयान एलपीजी की कमी को लेकर आई हालिया मीडिया रिपोर्ट्स के बीच आया है। उन्होंने संसद परिसर में पत्रकारों से बात करने के अलावा सोशल मीडिया पर तस्वीरें साझा करते हुए भी सरकार को घेरा।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। विधि सलाहकार: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com |website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा